CBSE Test Paper 02

Ch-4 नाना साहब की पुत्री और देवी मैना को भस्म कर दिया गया

1. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**
   इसके बाद कराल रूपधारी जनरल अउटरम भी वहाँ पहुँच गया। वह उसे तुरंत पहिचानकर बोला-"ओह! यह नाना की लडकी मैना है।" पर वह बालिका किसी ओर न देखती थी और न अपने चारों ओर सैनिकों को देखकर ज़रा भी डरी। जनरल अउटरम ने आगे बढ़कर कहा-"अंगरेज़ सरकार की आज्ञा से मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया।"

   i. जनरल अउटरम के लिए कौन-सा विशेषण प्रयुक्त है और क्यों?
   ii. मैना को पहचानने के बाद अउटरम की क्या प्रतिक्रिया हुई?
   iii. गद्यांश के आधार पर मैना की दो चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

2. नाना के महल में लूटपाट करने के बाद भी अंग्रेज़ नाना के महल को क्यों नष्ट करना चाहते थे?

3. जनरल अउटरम ने मैना के साथ कैसा व्यवहार किया?

4. मैना के तर्क एवं अनुनय पर जनरल 'हे' ने मकान न गिराने का अनुरोध जनरल अउटरम से किया। उसने यह अनुरोध क्यों ठुकरा दिया?

5. मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर बैठकर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण हृदय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी?

6. स्वाधीनता आंदोलन को आगे बढ़ाने में "नाना साहब की पुत्री देवी मैना...." के लेखन की क्या भूमिका रही होगी?

CBSE Test Paper 02

Ch-4 नाना साहब की पुत्री और देवी मैना को भस्म कर दिया गया

Answer

1. i. जनरल अउटरम के लिए 'कराल रूपधारी' विशेषण प्रयुक्त है क्योंकि वह अत्यंत क्रूर एवं अत्याचारी था। उसके मन में दया नाम का कोई भाव न था। उसका रूप अत्यंत डरावना था।
   ii. भग्न प्रसाद के अवशेष पर बैठकर रोती और सैनिकों से घिरी मैना को सबसे पहले कराल रूपधारी जनरल अउटरम ने पहचाना। उसके मुँह से आश्चर्य से निकल पड़ा, “ओह! यह नाना की लड़की मैना है।” उसने मैना की ओर कदम बढ़ाया और अंग्रेज़ सरकार की आज्ञा का हवाला देकर उसे गिरफ्तार कर लिया।
   iii. गद्यांश के आधार पर मैना की दो चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -
      i. मैना साहसी और निडर बालिका थी जो सैनिकों से घिरने पर भी निडर बनी रही।
      ii. उसे अपने पिता के महल और उनसे जुड़ी वस्तुओं से अत्यंत लगाव था।
2. नाना साहब ने कानपुर में अंग्रेज़ों को भारी क्षति पहुँचाई थी। अंग्रेज़ नाना को पकड़कर दंड देना चाहते थे, पर वे नाना को न पकड़ सके। इस कारण वे अत्यंत क्रोधित थे। अपने इस क्रोध को उन्होंने नाना साहब के महल पर उतारा। वे उनसे संबंधित हर वस्तु और व्यक्ति को नष्ट कर इसका बदला लेना चाहते। इसी कारण वे महल को नष्ट करना चाहते थे।
3. जनरल अउटरम ने मैना के साथ जो व्यवहार किया वो अमानवीय और संवेदनशून्य था। ध्वस्त राजप्रासाद के अवशेष पर बैठी मैना को पहचान कर उसने उसकी अंतिम इच्छा को अनसुना कर उसे गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद बंदी मैना को कानपुर के महल में लाकर उसे जलती चिता में जिंदा जला दिया। उसका ऐसा व्यवहार मानवता को कलंकित कर गया।
4. मैना के तर्क और अनुनय ने जनरल हे को मकान गिराने के बारे में सोचने पर विवश कर दिया। उसने वह मकान बचाने का प्रयास किया। उसके महल न गिराने के अनुरोध को सुनकर अउटरम ने मना करते हुए कहा कि गवर्नर जनरल की आज्ञा के बिना यह असंभव है। उसने सोचा था कि अब तक तो महल ध्वस्त हो चुका होगा पर ऐसा नहीं हुआ। क्रोधित अंग्रेज़ नाना या उनके किसी वंशज और वस्तु पर दया दिखाना नहीं चाहते थे, इसलिए उसने यह अनुरोध ठुकरा दिया।
5. मैना को अपना राजमहल बहुत ही प्रिय था। उस मकान को अउटरम ने ध्वस्त कर दिया था। वह प्रासाद के अवशेष पर बैठकर जी भरकर रोना चाहती थी पर अउटरम ने इसकी अनुमति नहीं दी क्योंकि उसे डर था कि इस छोटी बच्ची का विलाप सुनकर उसके सैनिको के ह्रदय में उसके प्रति सहानुभूति के भाव न उत्पन्न हो जाए। यह सहानुभूति अंग्रेज़ी सेना के विरुद्ध विद्रोह की भावना भी भड़का सकती थी। इसके अतिरिक्त उसे डर था कि मैना पर सहानुभूति दिखाने पर उसे अंग्रेज़ सरकार के क्रोध का भी सामना करना पड़ सकता था।
6. स्वाधीनता आंदोलन को आगे बढ़ाने में देशभक्तिपूर्ण और देश के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए प्रेरित करने वाले में इस प्रकार के लेखों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस तरह के लेख लोगों के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना को मजबूती प्रदान करने में अहम भूमिका निभाते हैं। उनके मन में देश के लिए कुछ करने का ज़ज्बा जाग जाता है। बलिदानों की गाथाएँ सुनकर उनका जोश और उत्साह बढ़ जाता है | उन्हें दासता का बंधन पिंजरे में बंद पक्षी के समान लगने लगता है। अतः यह रचनायें प्रत्येक व्यक्ति को अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए प्रेरित कर देती हैं । इस तरह एक-न-एक दिन वह अपने लक्ष्य तक पहुँच ही जाता है।